

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, चर्च और अंतिम चीज़ें, सत्र 2, चर्च के मुख्य अंश और चित्र

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा चर्च के सिद्धांतों और अंतिम बातों पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 2 है, चर्च के मुख्य अंश और चित्र।

हम चर्च के सिद्धांतों पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं, और आइए हम ईश्वर से मदद मांगें।

दयालु पिता, हमें प्यार करने के लिए, अपने बेटे को हमारे उद्धारकर्ता के रूप में भेजने के लिए, हमारे दिलों में पवित्र आत्मा भेजने के लिए, पिता, पिता, हमें अपने परिवार में अपना देने के लिए पुकारने के लिए आपका धन्यवाद। हम प्रार्थना करते हैं कि हमें आशीर्वाद दें। हमें अपने लोगों, ईश्वर के लोगों के प्रति समर्पित होने और सीखने में मदद करें, जिन्हें हम यीशु के नाम से मांगते हैं। आमीन।

हमने बाइबिल की कहानी का एक संक्षिप्त सर्वेक्षण किया, जिसमें ईश्वर के लोगों को उस संदर्भ में रखा गया। हमने मुख्य अंशों को देखना शुरू किया, पुराने नियम के अंशों की जाँच की।

अब, हम नए नियम के मुख्य अंशों पर चलते हैं, जो परमेश्वर के लोगों पर प्रकाश डालते हैं। मत्ती पाँच से सात तक, पहाड़ी उपदेश में। यहाँ, यीशु नए राज्य समुदाय के लिए अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

उपदेश के आनंदमय वचनों में, यीशु अपने समुदाय के मूल्यों को पुनः स्थापित करते हैं। उनके लोगों को धन, शक्ति, सम्मान या आराम से नहीं, बल्कि विश्वास, आशा और प्रेम से प्रेरित होना चाहिए। यीशु अपने राज्य समुदाय पर ईश्वर के आशीर्वाद का उच्चारण करके शुरू करते हैं।

मत्ती पाँच, तीन से बारह तक के धन्य वचनों में। यीशु इन आशीर्षों को एक नमूने में व्यक्त करते हैं। सबसे पहले, धन्य कहकर, जो विशेष विशेषताओं से चिह्नित हैं, आत्मा में गरीब, जो शोक करते हैं, नम्र, जो धार्मिकता के लिए भूखे और प्यासे हैं, दयालु, हृदय से शुद्ध, शांति स्थापित करने वाले, और धार्मिकता के लिए सताए गए।

यीशु यहाँ परमेश्वर के आशीर्वाद, उसके राज्य समुदाय और सच्ची आध्यात्मिकता को जोड़ते हैं। यीशु के लोग आध्यात्मिक रूप से चिह्नित आध्यात्मिकता जीते हैं, यीशु के लोग परमेश्वर पर निर्भरता, पश्चाताप की लालसा, विनम्रता, सच्ची धार्मिकता की इच्छा, ईमानदारी, दूसरों के साथ मेल-मिलाप और मसीह का ईमानदारी से अनुसरण करने के लिए उत्पीड़न से चिह्नित आध्यात्मिकता जीते हैं। फिर यीशु खुद आशीर्वादों को जोड़ता है।

स्वर्ग का राज्य उनका है, उन्हें सांत्वना मिलेगी, वे पृथ्वी के वारिस होंगे, वे संतुष्ट होंगे, उन्हें दया मिलेगी, वे परमेश्वर को देखेंगे, वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे, और स्वर्ग का राज्य उनका है। पहला

और अंतिम आशीर्वाद एक ही व्यापक आशीर्वाद के साथ समाप्त होता है; स्वर्ग का राज्य उनका है। बीच में छह आशीर्वाद भविष्य के आशीर्वाद से संबंधित हैं।

ध्यान दें कि भविष्य में आशीर्षें होंगी। बेशक, ऐसा लगता है कि आशीर्षें अभी हैं, लेकिन मुख्य रूप से, वे अभी नहीं हैं; वे भविष्य हैं। परमेश्वर यीशु के लोगों को आशीर्ष देता है जो अभी हमारे राज्य के समुदाय के लिए आशीर्षित हैं।

उनका स्वर्ग का राज्य है जो राज्य के पूर्ण अंतिम प्रदर्शन की प्रतीक्षा कर रहा है, बार-बार होगा। जॉन स्टॉट ने इसे अच्छी तरह से उद्धृत किया है: घोषित आशीर्वाद ईश्वर के शासन का शानदार व्यापक आशीर्वाद है, जिसे अभी चखा गया है और बाद में पूरा किया गया है, जिसमें पृथ्वी और स्वर्ग दोनों की विरासत, आराम, संतुष्टि और दया, ईश्वर का दर्शन और पुत्रत्व शामिल है। स्टॉट, पर्वत पर उपदेश का संदेश।

बाइबल आज बोलती है। पहाड़ी उपदेश का बाकी हिस्सा यीशु के अपने राज्य समुदाय के दृष्टिकोण को विस्तृत करता है। मत्ती 5, 17 से 48 में, यीशु अपने लोगों को समग्र पवित्रता के लिए बुलाता है क्योंकि वह इस बात पर प्रकाश डालता है कि सच्ची धार्मिकता शब्द-संतुष्ट, आंतरिक और बाह्य है।

मत्ती 6:1-18 में, यीशु सच्ची उपासना के लिए आह्वान करते हैं क्योंकि वे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि परमेश्वर, न कि दूसरे या हम, उपासना के एकमात्र श्रोता होने चाहिए। तीन आध्यात्मिक अनुशासनों, दान, प्रार्थना और उपवास के उदाहरणों का उपयोग करते हुए, फरीसी किन तीन अनुशासनों पर गर्व करते थे? और यह कि परमेश्वर के राज्य के प्रकाश में जीवन जीना ही राज्य प्रार्थना का मुख्य केंद्र है। मत्ती 6, 19-34 में, यीशु राज्य के मूल्यों को सामने रखते हैं क्योंकि वे सांसारिक खज़ानों की तुलना राज्य के महत्व से करते हैं।

मत्ती 7 में, यीशु उदार प्रेम की केंद्रीयता पर ध्यान केंद्रित करते हैं क्योंकि वह न्यायवाद को पलट देते हैं और सुनहरे नियम को आगे बढ़ाते हैं। दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप चाहते हैं कि वे आपके साथ करें। इस दौरान, यीशु स्पष्ट करते हैं कि उनके शिष्य होने का क्या मतलब है।

यीशु के समुदाय में सच्ची धार्मिकता है और वे सच्ची आध्यात्मिकता जीते हैं, जो राज्य के चरित्र, समग्र पवित्रता, सच्ची उपासना, राज्य के मूल्यों और उदार प्रेम से चिह्नित है। मसीहा के आगमन के बारे में इतना उत्साही और ऐसी आध्यात्मिकता को जीने के लिए प्रतिबद्ध समुदाय से यह अपेक्षा की जा सकती है कि वह आत्म-केंद्रित हो और बाकी समाज से अलग हो। हालाँकि, यीशु अपने लोगों की आध्यात्मिकता और मिशन को आपस में जोड़ता है।

वास्तव में, आध्यात्मिकता मिशन को बढ़ावा देती है। शिष्यत्व और मिशन एकहार्ट श्रेबेल के प्रारंभिक ईसाई मिशन, जीसस एंड द ट्वेल्व से अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं। जीसस के शिष्यों को बुलाया और भेजा जाता है, उन्हें राज्य के मार्ग का अनुसरण करने के लिए बुलाया जाता है और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए बुलाया जाता है।

उनके राज्य समुदाय की अंतर्निहित मिशनरी प्रकृति आश्चर्यजनक है क्योंकि वे इसे पृथ्वी का नमक, मत्ती 5:13, और दुनिया की ज्योति, पद 14 कहते हैं। ये छवियाँ उन धन्य वचनों पर आधारित हैं जिनमें यीशु परमेश्वर के राज्य को मानवीय शक्ति और सम्मान से नहीं बल्कि आध्यात्मिक गरीबी, शोक, नम्रता, भूख, दया, शांति और उत्पीड़न से जोड़ते हैं। इन छवियों का मूल आधार पवित्र राज्य समुदाय के रूप में विशिष्टता है, पद 3 से 12 तक।

दुनिया क्षय में है, और यीशु के लोग नमक हैं। दुनिया अंधकार में है, और यीशु के लोग प्रकाश हैं। दोनों छवियाँ न केवल राज्य की विशिष्टता को दर्शाती हैं, बल्कि समुदाय के पवित्र जीवन और सुसमाचार की गवाही के मिशन को भी स्पष्ट करती हैं।

मत्ती 16:16-19. प्रसिद्ध लॉज़ेन वाचा, जहाँ दुनिया भर के इंजीलवादियों ने सुसमाचार प्रचार और मिशन के कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर सहमति व्यक्त की थी, में यह कथन शामिल है। हम पुष्टि करते हैं कि परमेश्वर पूरे चर्च को पूरे सुसमाचार को पूरी दुनिया में ले जाने के लिए बुला रहा है, इसलिए हम उसके आने तक इसे ईमानदारी से, तत्परता से और बलिदानपूर्वक घोषित करने के लिए दृढ़ हैं - मनीला घोषणापत्र, लॉज़ेन मूवमेंट वेबसाइट।

मत्ती 16:16-19 यीशु और चर्च के बारे में अपनी शिक्षा के लिए प्रसिद्ध है। यीशु ने शिष्यों से पूछा कि वे उसे बताएं कि लोग उसे कौन समझते हैं। उनके उत्तरों में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, मृतकों में से जी उठा; एलिय्याह, पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई, मलाकी 4:5; और यिर्मयाह या कोई अन्य भविष्यवक्ता, मत्ती 16.14 शामिल हैं। फिर यीशु ने उनसे एक समूह के रूप में पूछा कि वे उसे कौन समझते हैं।

साइमन पीटर, जो अक्सर नेता के रूप में कार्य करता है, उनके लिए जवाब देता है। आप मसीहा हैं, एक जीवित परमेश्वर के पुत्र, मैथ्यू 16.16। यीशु कहते हैं कि पतरस मानवीय बुद्धि से नहीं बल्कि दिव्य बुद्धि से बोलता है। स्वर्ग में यीशु के पिता ने पतरस को यीशु की पहचान बताई है, श्लोक 17।

यीशु के पुनरुत्थान और शिष्यों के सामने प्रकट होने के बाद ही वे इन शब्दों को पूरी तरह समझ पाएंगे। यीशु ने पीटर और रॉक के बीच शब्दों का खेल खेला और घोषणा की कि पीटर यीशु के चर्च के निर्माण में एक प्रमुख नेता होगा। डीए कार्सन अंतर्दृष्टिपूर्ण हैं।

यदि रोमन कैथोलिक व्याख्या के अतिवाद के विरुद्ध प्रोटेस्टेंट प्रतिक्रियाएँ न होतीं, तो यह संदेहास्पद है कि क्या बहुत से लोग रॉक को पीटर के अलावा कुछ और या कोई और मानते। मैथ्यू की टिप्पणी, एक्सपोजिटर्स बाइबल कमेंट्री श्रृंखला में मैथ्यू पर कार्सन की टिप्पणी। यह मार्क और ल्यूक पर टिप्पणियों के साथ रखा गया है, इस प्रकार सिनॉटिक्स।

मैं कार्सन से सहमत हूँ। यीशु के दावे का मर्म अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। यह है, उद्धारण, मैं अपना चर्च बनाऊँगा, उद्धारण समाप्त, श्लोक 18।

यह इस्राएल के यहोवा के लोग होने के प्रकाश में एक आश्चर्यजनक घोषणा है। यहाँ, यीशु खुद को प्रभु और मसीहा के रूप में घोषित करता है, जिसने एक मसीहाई समुदाय और अपने लोगों का प्रभु बनाया। परमेश्वर के ये वाचा के लोग यीशु के लोग होंगे।

पतरस की तरह, वे स्वीकार करेंगे कि यीशु मसीह है, परमेश्वर का पुत्र। अधोलोक के द्वार एक पुराने नियम की अभिव्यक्ति है जो मृत्यु को संदर्भित करती है। अय्यूब 17:16, भजन 9:13, यशायाह 38:10।

नरक के द्वार उस चर्च के विरुद्ध प्रबल नहीं होंगे जिसे यीशु बनाएंगे। नरक के द्वार पुराने नियम में मृत्यु का चित्रण है। अय्यूब 17:16, भजन 9:13, यशायाह 38:10.

इस तथ्य के बावजूद कि यह युद्ध में है, यीशु का चर्च नष्ट नहीं होगा। वह कौन है और वह क्या हासिल करेगा, उसके कारण उसका चर्च अपने शत्रुओं पर विजयी होगा, जिसमें कट्टर शत्रु, मृत्यु भी शामिल है। यीशु पतरस और अन्य शिष्यों को स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ देता है, अर्थात्, इसमें प्रवेश को स्वीकार करने या अस्वीकार करने की क्षमता, मत्ती 16:19।

सुसमाचार का प्रचार करके, शिष्य विश्वासियों को परमेश्वर के राज्य में आमंत्रित करेंगे और अविश्वासियों को इससे बाहर निकाल देंगे। पृथ्वी पर उनके कार्य स्वर्ग में परमेश्वर के पिछले कार्यों को प्रतिबिम्बित करेंगे। परमेश्वर उन्हें और यीशु की पहचान के बारे में उनकी बढ़ती समझ का उपयोग सुसमाचार घोषणा के माध्यम से अपने राज्य का विस्तार करने के लिए करेगा।

ध्यान दें कि यीशु यहाँ सार्वभौमिक और स्थानीय दोनों ही शब्दों में चर्च के बारे में बात करते हैं। चर्च की अंतिम जीत किसी तरह के सार्वभौमिक चर्च की ओर इशारा करती है जो समय की कसौटी पर खरा उतरेगा, जबकि सुसमाचार की घोषणा और कुंजियाँ लोगों के एक ठोस, दृश्यमान समूह की ओर इशारा करती हैं। प्रेरितों के काम 2:37-47.

अब, जब यहूदियों ने जो पिन्तेकुस्त के यहूदी पर्व के लिए यरूशलेम में गए थे, पतरस का उपदेश सुना जिसमें उन्होंने यीशु को प्रभु और मसीह दोनों घोषित किया और कहा कि यहूदियों ने उसे क्रूस पर चढ़ाया था, अब जब उन्होंने यह सुना, तो वे दिल से जल गए और पतरस और बाकी प्रेरितों से पूछा, हे भाइयो, साथी यहूदियों, इसका मतलब है, हम क्या करें? पतरस ने उनसे कहा, तुम में से हर एक अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से पश्चात्ताप करो और बपतिस्मा लो, और तुम अपने और अपनी संतानों के लिए और उन सभी के लिए जो दूर हैं, हर एक को प्रतिज्ञाओं के लिए पवित्र आत्मा का उपहार पाओगे, जिन्हें प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाता है। और बहुत सी और बातों से उसने गवाही दी और उन्हें यह कहकर समझाता रहा, कि अपने आप को इस टेढ़ी जाति से बचाओ। और जिन्होंने वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया, और उस दिन लगभग 3,000 व्यक्ति जुड़ गए।

और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, संगति करने, रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में लगे रहे। और हर एक प्राणी पर भय छा गया, और प्रेरितों के द्वारा बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह दिखाए जाते थे। और जितने विश्वासी थे, वे सब इकट्ठे रहते थे, और सब वस्तुएं साझे में रखते थे।

उन्होंने अपनी संपत्ति और सामान बेच दिया और ज़रूरत के हिसाब से सभी को बाँट दिया। वे हर दिन एक साथ मंदिर जाते थे और अपने घरों में रोटी तोड़ते थे। वे खुशी और उदारता से अपना भोजन ग्रहण करते थे, परमेश्वर की स्तुति करते थे और सभी लोगों से अनुग्रह पाते थे। और प्रभु ने दिन-प्रतिदिन उन लोगों की संख्या में वृद्धि की जो उद्धार पा रहे थे।

पिन्तेकुस्त के दिन, प्रेरित पतरस ने प्रचार किया कि उसके श्रोताओं ने यीशु को अस्वीकार कर दिया है और उसे क्रूस पर चढ़ा दिया है। लेकिन परमेश्वर ने क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु को मृतकों में से जिलाया और उसे अपने दाहिने हाथ पर बिठाया, और सार्वजनिक रूप से उसे मसीह में प्रभु घोषित किया, प्रेरितों के काम 2:36। ये शब्द उन लोगों को दोषी ठहराते हैं जो उनके पापों के बारे में सुनते हैं। ये शब्द उन लोगों को दोषी ठहराते हैं जो उनके पापों के बारे में सुनते हैं।

और वे प्रेरितों से पूछते हैं कि उन्हें कैसे जवाब देना चाहिए। पतरस उनसे अपने पापों से फिरने और बपतिस्मा लेने का आग्रह करता है, प्रेरितों के काम 2:38। वह समझाता है कि सुसमाचार उसके श्रोताओं, उनके बच्चों और उन सभी लोगों के लिए है जो दूर-दूर रहते हैं, जितने लोगों को हमारा प्रभु परमेश्वर बुलाएगा। यह एक उद्घरण है।

पद 39, 3,000 लोग सुसमाचार पर विश्वास करते हैं और बपतिस्मा लेते हैं। पद 41 में, लूका उन गतिविधियों का सारांश देता है जो वे कलीसिया के रूप में एक साथ करते हैं। उद्घरण, उन्होंने खुद को प्रेरितों की शिक्षा और रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने की संगति के लिए समर्पित कर दिया।

विश्वासी प्रेरितों के निर्देश के प्रति समर्पित होते हैं, जो चर्च जीवन का हृदय है। ईसाई एक दूसरे के जीवन में पिता और पुत्र के साथ अपनी संगति के रूप में शामिल होते हैं, 1 यूहन्ना 1:3। पिता और पुत्र के साथ उनकी संगति के रूप में, 1 यूहन्ना 1:3, एक दूसरे के साथ संगति में परिणत होता है, जिसमें भौतिक संपत्ति साझा करना भी शामिल है, प्रेरितों के काम 2:44-45। प्रारंभिक चर्च की एक विशेषता यह है कि यह परमेश्वर के लोगों को आदेशित नहीं किया गया है; यह स्वैच्छिक है। क्या इसका मतलब यह है कि हमें यह करना ही होगा? बिल्कुल नहीं, यह स्वैच्छिक है।

क्या इसका मतलब यह है कि इसे किसी और के द्वारा कहीं भी नहीं देखा जा सकता है? नहीं, इसका मतलब यह नहीं है कि यह एक संभावना है। कुछ संदर्भों में, प्रभु नेतृत्व करेंगे, लेकिन यह निश्चित रूप से साम्यवाद नहीं है, हे भगवान। प्रारंभिक चर्च रोटी तोड़ने के लिए प्रतिबद्ध था, श्लोक 42, जो या तो एक साथ भोजन करने या प्रभु के भोज को संदर्भित करता है।

वे निश्चित रूप से भोजन साझा करते हैं; पद 46, प्रेरितों के काम 20, और पद 7 रविवार की पूजा में प्रभु के भोज के पालन का उल्लेख करते हैं। और इसलिए मैं इसे यहाँ भी प्रभु का भोज मानता हूँ। इसके अलावा, विश्वासी प्रार्थना के लिए खुद को समर्पित करते हैं, जो उनके साझा जीवन का एक मूल्यवान हिस्सा है।

आरंभिक कलीसिया की विशेषता थी एक साथ मिलना-जुलना, साथ में खाना-पीना, आनन्द, प्रशंसा, अविश्वासियों के बीच अच्छी प्रतिष्ठा, और संख्या में वृद्धि, पद 46-47। 1 कुरिन्थियों 12:14-31। उद्धार में पवित्र आत्मा सभी विश्वासियों को मसीह और एक दूसरे से जोड़ता है।

पवित्र आत्मा हमें मसीह के शरीर का हिस्सा बनाता है, 1 कुरिन्थियों 12:12 और 13. इसका मतलब है कि हम, अन्य मसीहियों के साथ, सभी अन्य मसीही, मसीह और एक दूसरे के हैं। हम सभी मसीह के शरीर के सदस्य हैं, 1 कुरिन्थियों 12:14.

इसलिए, चर्च के कम विशिष्ट सदस्य भी मसीह के शरीर का उतना ही हिस्सा हैं जितना कि विशिष्ट लोग, पद 15 और 16। भले ही अगोचर लोग यह न सोचें कि वे मसीह के हैं, फिर भी वे हैं, क्योंकि शरीर को प्रत्येक सदस्य के योगदान की आवश्यकता होती है, पद 17।

पॉल ईश्वरीय डिजाइन का एक प्रमुख सिद्धांत प्रस्तुत करता है, उद्धरण, 1 कुरिन्थियों 12:18। लेकिन जैसा कि यह है, परमेश्वर ने शरीर में सदस्यों को व्यवस्थित किया, उनमें से प्रत्येक को उसने चुना। उन लोगों को संबोधित करने के बाद जो सोचते हैं कि वे महत्वहीन हैं, पॉल उन लोगों की ओर मुड़ता है जो अपने महत्व को अधिक महत्व देते हैं। चाहे वे कुछ भी सोचें, मसीह के शरीर के प्रत्येक सदस्य को अन्य सदस्यों की आवश्यकता है, 1 कुरिन्थियों 12:21-24।

वास्तव में, परमेश्वर ने शरीर को आदेश दिया है कि कोई विभाजन न हो, कि शरीर में कोई विभाजन न हो, श्लोक 25, और कि सदस्य एक दूसरे के लिए समान देखभाल कर सकें। परमेश्वर चाहता है कि चर्च के सदस्य एक दूसरे के दुख में शामिल हों और जब अन्य सदस्यों को सम्मानित किया जाता है तो वे आनन्दित हों, श्लोक 26, क्योंकि जब ऐसा होता है जब अन्य लोग पीड़ित होते हैं, तो वे पीड़ित होते हैं क्योंकि वे एक ही शरीर का हिस्सा हैं। यदि आप अपनी उंगली को हथौड़े से मारते हैं, तो पूरा शरीर दर्द करता है।

और अगर आपको कोई पुरस्कार मिलता है और आप उसे अपने हाथों से लेते हैं, तो आपके पैर भी इसमें भाग लेते हैं, और आप पुरस्कार लेने के लिए आगे बढ़ते हैं। हे भगवान। यानी, बाइबल चर्च को न केवल नेताओं और अनुशासन वगैरह वाले संगठन के रूप में बल्कि एक जीव, एक जीवित चीज़, धरती पर मसीह के शरीर के रूप में भी बताती है।

पॉल ने दोहराया कि चर्च मसीह का शरीर है और व्यक्तिगत रूप से, उसके सदस्य हैं, श्लोक 27। वह महत्व के अनुसार उपहारों को क्रमबद्ध करता है और कुरिन्थियों से आग्रह करता है कि वे इस क्रम के प्रकाश में उन्हें खोजें। स्पष्ट रूप से, प्रेरित, भविष्यद्वक्ता और शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण हैं, और अन्यभाषाएँ सबसे कम महत्वपूर्ण हैं श्लोक 28।

फिर, पद 29 और 30 में, पौलुस इस बात पर बल देता है और उद्धरण देता है कि कोई भी वरदान सभी विश्वासियों के लिए समान नहीं है, जैसा कि पद 18 में कहा गया है। मेरा मतलब है, क्षमा करें, यह एक उद्धरण है, पद 18 नहीं। फुटनोट 18।

यह 1 कुरिन्थियों, चियाम्पा और रोस्नर, *द फर्स्ट लेटर टू द कोरिंथियंस*, पृष्ठ 609 पर मेरी पसंदीदा टिप्पणी से एक उद्धरण है। मैं इस बिंदु पर जोर देना चाहता हूँ क्योंकि अच्छे भाई और बहन भ्रमित हैं। 1 कुरिन्थियों 12:12 में, जैसे शरीर एक है, वैसे ही मानव शरीर में कई अंग हैं, और शरीर के सभी अंग, हालांकि कई एक शरीर हैं, इसलिए यह मसीह के साथ भी है।

क्योंकि हम सब एक ही आत्मा से एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिये गये। क्या यहूदी, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, सब को एक ही आत्मा पिलायी गयी। मसीह में हर एक विश्वासी मसीह की देह में बपतिस्मा पाता है।

और फिर, उसी अध्याय के अंत में, वह कहता है, क्या सभी प्रेरित हैं, क्या सभी भविष्यवक्ता हैं, इत्यादि। तकनीकी रूप से, वह कहता है, सभी प्रेरित नहीं हैं, है न? सभी भविष्यवक्ता नहीं हैं, है न? अगर मैं अनुसरण करता हूँ, तो क्या वे अन्य भाषाओं में नहीं बोलते? सभी व्याख्या नहीं करते, है न? हर उत्तर में नहीं निहित है। हर उत्तर के लिए, नकारात्मक उत्तर की अपेक्षा करने के लिए ग्रीक कण *may* का उपयोग किया जाता है।

इसलिए, सभी विश्वासियों को मसीह के शरीर में बपतिस्मा दिया जाता है, और सभी को वह आत्मा का बपतिस्मा मिलता है। लेकिन ऐसा कोई एक उपहार नहीं है जो सभी के पास हो। इसलिए, यह दावा करना कि एक उपहार सार्वभौमिक होना चाहिए, बिलकुल गलत है।

सभी विश्वासियों को मसीह के शरीर में बपतिस्मा दिया जाता है, लेकिन ऐसा कोई उपहार नहीं है जो सभी के पास हो। यह ईश्वरीय योजना है कि हमें एक-दूसरे की ज़रूरत होगी। सभी लोग अन्य भाषाएँ नहीं बोलते।

अन्यभाषा में बोलना मसीह में बपतिस्मा लेने का प्रमाण नहीं है। मैं अपने दिल में उन भाइयों और बहनों के प्रति उदारता से बात करता हूँ जो सोचते हैं कि ऐसा ही है। इसलिए यह सिखाना एक गलती है कि उद्धार के लिए किसी विशेष आध्यात्मिक उपहार का होना ज़रूरी है, न कि सिर्फ़ अन्यभाषाओं का।

यह एक और सुसमाचार है। यह पेंटेकोस्टलिज़्म की एकता है। आपको उद्धार के लिए पवित्र आत्मा प्राप्त करने के प्रमाण के रूप में अन्य भाषाओं में बोलना चाहिए, यह एक और सुसमाचार है।

लेकिन शुक्र है कि एसेम्बलीज़ ऑफ़ गॉड और विश्वव्यापी पेंटेकोस्टलिज़्म में ईश्वरीय विश्वासियों के लिए यह एकता पेंटेकोस्टलिज़्म नहीं है। यह ऐसा नहीं सिखाता। हम इसके लिए आभारी हैं।

लेकिन अगर वे आपको सिखाते हैं कि सशक्तीकरण और सेवा के लिए अन्यभाषा में बोलना ज़रूरी है, तो यह भी एक गलती है, और मुझे बाइबल की व्याख्या के लिए प्रतिबद्ध एक ईसाई धर्मशास्त्री के रूप में इसे इंगित करना होगा। पॉल सबसे अच्छा आखिर में छोड़ देता है जब वह अपने पाठकों को एक और भी बेहतर तरीका दिखाने का वादा करता है, श्लोक 31। मैं आपको एक बेहतर तरीका दिखाऊंगा, ईएसवी।

यही प्रेम का मार्ग है। वह अगले अध्याय को इसी विषय पर समर्पित करता है, जो उसके तर्क को मजबूत करता है, यह बताते हुए कि मसीह के शरीर में विश्वासियों को एक दूसरे से कैसे संबंध रखना चाहिए, पुराने नियम में बताए गए प्रेम के साथ और जिसे मसीह अपने शब्दों और कर्मों में प्रदर्शित करता है।

लैव्यव्यवस्था 19:18 देखें। मैं याददाश्त के आधार पर जाना चाहता हूँ, लेकिन मैं गलत जानकारी नहीं देना चाहता। तुम्हें अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना चाहिए। यही मैंने सोचा था।

मैं बस सावधान रहना चाहता हूँ। और जैसा कि यीशु ने कहा, एक दूसरे से प्रेम करो जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया है। यूहन्ना 13:34. मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि तुम एक दूसरे से वैसा ही प्रेम करो जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया है, और तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो।

इफिसियों 2:11-22. हमारी तस्वीरों में से आखिरी। और यह अंश भी पढ़ने लायक है। बड़े पैमाने पर गैर-यहूदी विश्वासियों को लिखते हुए, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि पुराने नियम में कहा गया है, इसलिए याद रखें कि एक समय में आप शरीर में गैर-यहूदी, जिसे खतना कहा जाता है, जिसे खतना कहा जाता है, जो हाथों से शरीर में किया जाता है, याद रखें कि आप उस समय, आप उस समय मसीह से अलग थे।

यही उनकी बड़ी समस्या है। वे इस्राएल के राष्ट्रमंडल से अलग-थलग हैं और वादे की वाचाओं से अनजान हैं, उनके पास कोई उम्मीद नहीं है और दुनिया में ईश्वर नहीं है। यह एक भयानक दुर्दशा है।

परन्तु अब मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो, क्योंकि वही आप हमारा मेल है, जिस ने हमें एक कर लिया और बैर को अलग करनेवाली दीवार को अपनी देह में से ढा दिया। और उस व्यवस्था को जो विधियों की रीति पर आज्ञाओं की रीति पर थी, मिटाकर उन दोनों के स्थान पर अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे, और क्रूस के द्वारा बैर को नाश करके हम दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिला दे।

और उसने आकर तुम्हें जो दूर थे, और उन्हें जो निकट थे, शान्ति का सुसमाचार सुनाया। क्योंकि उसी के द्वारा हम दोनों की एक ही आत्मा में पिता के पास पहुँच होती है। तो अब तुम अजनबी और परदेशी नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी नागरिक और परमेश्वर के घराने के सदस्य हो, जो प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर बने हैं, जिसके कोने का पत्थर यीशु मसीह आप ही है, जिस में सारी संरचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है।

उसमें, तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर के लिए निवास स्थान के रूप में एक साथ बनाए जा रहे हो। पौलुस अन्यजातियों को संबोधित करता है और उन्हें मसीह को जानने से पहले उनकी स्थिति की याद दिलाता है। वे, उद्धरण, अलग नहीं थे, मसीह के बिना अलग थे।

वे मसीह से अलग हो गए थे, बिना किसी आशा के और संसार में परमेश्वर के बिना, इफिसियों 2:12। लेकिन अब परमेश्वर उन्हें मसीह से जोड़ता है, और वे अब परमेश्वर से दूर नहीं हैं, बल्कि मसीह के लहू, क्रूस पर उसकी प्रायश्चित मृत्यु के माध्यम से उसके करीब हैं, पद 13। उद्धार से

पहले, हमारे पापों ने हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर दिया था, लेकिन उसने पहल की और अपने बेटे को शांतिदूत के रूप में भेजा। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान ने परमेश्वर और हमारे बीच और परमेश्वर के बीच शांति स्थापित की।

उसके मेलमिलाप के कार्य ने विश्वास करने वाले यहूदियों और अन्यजातियों को भी एकीकृत किया, जिससे हम दोनों से एक नया मनुष्य बन गए, जिसके परिणामस्वरूप शांति हुई, पद 14 और 15। मध्यस्थ मसीह के कार्य के कारण, यहूदी और अन्यजाति जो उस पर प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करते हैं, उन्हें परमेश्वर के साथ शांति प्राप्त है, पद 17। दोनों ही मसीह की कलीसिया का हिस्सा बन जाते हैं और त्रिएकत्व के साथ एक संबंध प्राप्त करते हैं।

मसीह के द्वारा, दोनों समूह एक आत्मा में परमेश्वर, अर्थात् पिता की उपस्थिति में आते हैं, पद 18। मसीह की मेल-मिलाप वाली मृत्यु और पुनरुत्थान के परिणामस्वरूप, गैर-यहूदी विश्वासी बाहर से अंदर की ओर नहीं देख रहे हैं। बल्कि, वे परमेश्वर के राज्य के साथी नागरिक हैं और कलीसिया, अर्थात् परमेश्वर के लोग हैं।

वास्तव में, वे पद 19, परमेश्वर के घराने के सदस्य हैं। फिर पौलुस घर और मंदिर की कल्पना का उपयोग करके कलीसिया का विस्तार करता है। परमेश्वर विश्वास करने वाले अन्यजातियों को अपने परिवार में शामिल करता है और उन्हें अपने घर का हिस्सा भी बनाता है।

यह घर, जो एक मंदिर बन जाता है जहाँ परमेश्वर निवास करता है, एक आधारशिला के साथ नींव पर बनाया गया है। वह नींव प्रेरित और नए नियम के भविष्यद्वक्ता हैं जो अन्यजातियों को सुसमाचार का प्रचार करते हैं। आधारशिला, इमारत का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा, स्वयं मसीह यीशु है, श्लोक 20।

इस प्रकार चर्च का निर्माण यीशु पर हुआ है, जो क्रूस पर चढ़ाए गए और जी उठे, तथा उनके प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर जो उनका संदेश लेकर आए। अब हम चर्च के बाइबिल चित्रों पर विचार करने के लिए आगे बढ़ते हैं। अवलोकन।

बाइबल चर्च को कई चित्रों या छवियों, कई रूपकों या रूपकों में चित्रित करती है। हम उनमें से कुछ सबसे महत्वपूर्ण पर विचार करेंगे। हम मसीह का शरीर, मसीह की दुल्हन, पवित्र आत्मा का मंदिर, नई मानवता, परमेश्वर का परिवार, परमेश्वर के लोग हैं।

हम मसीह की देह हैं। पौलुस सिखाता है कि कलीसिया मसीह की देह है। यह चित्र मसीह को सर्वोपरि बताता है।

कुलुस्सियों 1:18, वह अपने शरीर, चर्च का भी मुखिया है, कुलुस्सियों 1:18। शरीर के मुखिया के रूप में, मसीह चर्च के जीवन का स्रोत है। वह शुरुआत है, मृतकों में से ज्येष्ठ, श्लोक 18। जी उठे, वह नई सृष्टि का उद्घाटन करते हैं और अनंत जीवन देते हैं।

नया स्वर्ग और पृथ्वी अपनी पूर्णता की प्रतीक्षा कर रहे हैं, लेकिन मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान ने अब एक नई सृष्टि की शुरुआत की है ताकि हम नश्वर शरीर में अनन्त जीवन प्राप्त करें क्योंकि

हम अपने अमर शरीर की प्रतीक्षा कर रहे हैं, रोमियों 8:10-11। उनके मुखियापन का यह भी अर्थ है कि वे चर्च के अंतिम अधिकारी हैं, कुलुस्सियों 2:19। हमें उनकी आज्ञा माननी चाहिए, हमें संसार में उनकी आज्ञा माननी चाहिए। पवित्र आत्मा हमें एक शरीर में मसीह और एक दूसरे से जोड़ता है, जैसा कि हमने 1 कुरिन्थियों 12:13 में देखा। मसीह शरीर का मुखिया है। हम इसके सदस्य हैं, 1 कुरिन्थियों 12:27। मसीह चर्च के साथ एक है, फिर भी अलग है। वह हमेशा मुखिया है, और हम हमेशा शरीर हैं।

शरीर की छवि विश्वासियों के सदस्यों के साथ संबंध को व्यक्त करती है, न केवल मसीह, उनके सिर, रोमियों 12:6-8, बल्कि एक दूसरे के साथ भी, जैसा कि हमने अभी 1 कुरिन्थियों 12:14-27 में देखा। जिस तरह हमारे शारीरिक अंग हमारे हैं, उसी तरह हम मसीह के हैं। और उसके साथ हमारी एकता के कारण, हम एक दूसरे के हैं और एक दूसरे पर निर्भर हैं। मसीह चाहता है, उद्धारण, कि शरीर में कोई विभाजन नहीं होना चाहिए, बल्कि सदस्यों को एक दूसरे के लिए समान चिंता होनी चाहिए, 1 कुरिन्थियों 12:25। परमेश्वर मसीह के चर्च का काम उसे और उसके लोगों को सौंपता है।

चर्च के नेताओं को सदस्यों को मंत्रालय में शामिल होने के लिए प्रशिक्षित करना है, मसीह के शरीर को उन्नत करना है, इफिसियों 4:12। मसीह विकास के लिए प्रेरणा प्रदान करता है, लेकिन शरीर का मुखिया और उसके सदस्य दोनों शारीरिक विकास में सक्रिय हैं, श्लोक इफिसियों 4:15-16। शरीर की छवि गतिशील है, क्योंकि शरीर बढ़ता है और परिपक्व होता है, इफिसियों 4:19, कुलुस्सियों 2:19, क्योंकि यह दुनिया में मसीह के साधन के रूप में कार्य करता है। चर्च की बाइबिल की तस्वीरें मसीह की दुल्हन थीं। पॉल चर्च को मसीह की दुल्हन के रूप में चित्रित करता है।

वह मसीह के साथ मिलन की इस सबसे अंतरंग तस्वीर का उपयोग यह सिखाने के लिए करता है कि हम आध्यात्मिक रूप से मसीह से विवाहित हैं। यह छवि ईश्वर की कृपा से परिपूर्ण है, क्योंकि मसीह विवाह की पहल करता है, अपनी दुल्हन, चर्च, जो उसके प्रेम और देखभाल की वस्तु है, के लिए खुद को मृत्यु में अर्पित करता है, इफिसियों 5:25। यह तस्वीर ईश्वर की कृपा और संप्रभुता पर जोर देती है, लेकिन हमारी जिम्मेदारी को नहीं छोड़ती। पौलुस ऐसे बोलता है जैसे उसने कुरिन्थियों को एक पति, अर्थात् मसीह से विवाह का वादा किया था, 2 कुरिन्थियों 11:2। पौलुस का लक्ष्य कुरिन्थियों को यीशु के दोबारा आने पर पवित्रता में प्रस्तुत करना है।

ईश्वरीय ईर्ष्या के साथ, पौलुस को डर है, कि कहीं उसके पाठक, पौलुस को डर है, कि कहीं उसके पाठक, मसीह के प्रति एक ईमानदार और शुद्ध भक्ति से आध्यात्मिक व्यभिचार में बहक न जाएँ, उद्धारण, 2 कुरिन्थियों 11:3। इसके बजाए, जैसे एक दुल्हन विवाह में विशेष रूप से अपने प्यारे पति के अधीन होती है, वैसे ही कलीसिया को भी अपने प्यारे पति, मसीह के अधीन होना चाहिए, इफिसियों 5:23-24। यूहन्ना भी पुराने नियम के उस चित्र पर निर्माण करता है जिसमें परमेश्वर के लोग अपने पति के लिए दुल्हन के रूप में स्वयं को सजाते हैं, यशायाह 61:10। यूहन्ना अपने संतों के प्रति स्नेह की परमेश्वर की वाचागत प्रतिज्ञाओं के पूरे होने का चित्रण करता है। यूहन्ना घोषणा करता है,

धन्य हैं वे जो मेमे के विवाह भोज में आमंत्रित हैं, प्रकाशितवाक्य 19:7-9। यूहन्ना 19:6-8 की विवाह की कल्पना को मसीह और उसके चर्च के बीच अंतिम एकता के संदर्भ में व्याख्या करता है: उद्धरण, मैंने पवित्र नगर, नए यरूशलेम को भी स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, जो अपने पति के लिए सजी हुई दुल्हन की तरह तैयार थी। फिर मैंने सिंहासन से एक ऊँची आवाज़ सुनी: देखो, परमेश्वर का निवास मनुष्यों के साथ है, और वह उनके साथ रहेगा। वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर स्वयं उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा, प्रकाशितवाक्य 21:2-3। हम मसीह की देह हैं, मसीह की दुल्हन।

हम पवित्र आत्मा के मंदिर हैं। पॉल चर्च, परमेश्वर के लोगों को एक मंदिर के रूप में चित्रित करता है। सुलैमान के भव्य मंदिर की पृष्ठभूमि के खिलाफ, वह साहसपूर्वक ईसाइयों को, उद्धरण, परमेश्वर का मंदिर कहता है।

आप ईश्वर के मंदिर हैं, 1 कुरिन्थियों 3:16 और 17. पॉल सिखाता है कि ग्रीको-रोमन मंदिर में आत्मा ईश्वर या देवी का स्थान लेती है। वास्तव में, चर्च को मंदिर के रूप में मानने वाले अंशों में, जिसमें 1 कुरिन्थियों 6:19 और 20, 2 कुरिन्थियों 6:16, इफिसियों 2:19-22 शामिल हैं।

चर्च को मंदिर के रूप में पेश करने वाले अंशों में, 1 कुरिन्थियों 6:19-20, 2 कुरिन्थियों 6:16, इफिसियों 2:19-22। पॉल कहते हैं कि यह परमेश्वर की उपस्थिति है जो एक चर्च को चर्च बनाती है। परमेश्वर के लोगों का यह मंदिर गतिशील और जैविक है, एक इमारत जो हमारी आँखों के सामने एक मंदिर में विकसित हो रही है, श्लोक 21 और 22।

पॉल ने पुष्टि की कि ईश्वर अपने लोगों में व्यक्तिगत रूप से निवास करता है, लेकिन उसका जोर सामुदायिक रूप से ईश्वर के मंदिर के रूप में उनके भीतर निवास करने पर है। मसीह में, हम जीवित ईश्वर के मंदिर हैं, त्रिएक ईश्वर की आराधना करते हैं, इफिसियों 2:18। पतरस भी चर्च को एक मंदिर के रूप में प्रस्तुत करता है, एक जीवित मंदिर जिसमें मसीह एक जीवित पत्थर के रूप में है, 1 पतरस 2:4, यीशु के खुद को आधारशिला के रूप में संदर्भित करने को याद करता है।

मत्ती 21:42 में भजन 118:52 की तुलना करें। यीशु ने खुद को आधारशिला कहा, सबसे महत्वपूर्ण पत्थर जिसे बिल्डरों ने यहूदी नेताओं की आलोचना में अस्वीकार कर दिया था जो उसके लिए ठोकर खा रहे थे। मत्ती 21:42 में भजन 118:22। पतरस मसीह को आधारशिला के रूप में प्रस्तुत करता है जो उन लोगों को बचाता है जो विश्वास करते हैं और उनका न्याय करते हैं जो उसे अस्वीकार करते हैं। 1 पतरस 2:6 से 8। पतरस जी उठे मसीह को जीवित पत्थर के रूप में प्रस्तुत करता है, श्लोक 4। वह मृत्यु से जीवित है और अपने लोगों के लिए शाश्वत आध्यात्मिक जीवन का स्रोत है।

1 पतरस 1:3, 1:23. पतरस ने अपने पत्थर के चित्रण को परमेश्वर के लोगों को शामिल करने के लिए विस्तारित किया। मसीह, जीवित पत्थर में विश्वासियों के रूप में, हम स्वयं जीवित पत्थर हैं, जो उससे आध्यात्मिक जीवन प्राप्त करते हैं। 1 पतरस 2:4, और 5. परमेश्वर इन पत्थरों का उपयोग एक इमारत बनाने के लिए करता है, जिसे पतरस आध्यात्मिक घर कहता है, जहाँ हम

विश्वासी याजकों के रूप में यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर को स्वीकार्य आध्यात्मिक बलिदान चढ़ाने के लिए सेवा करते हैं।

पद 5. इस प्रकार पतरस ने चर्च को एक जीव के रूप में चित्रित किया है। हम यीशु के पुनरुत्थान जीवन के साथ जीवित हैं। मसीह के साथ एकता के माध्यम से, परमेश्वर ने हमें एक जीवित आशा में नया जन्म दिया है।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिन्होंने यीशु मसीह के मृतकों में से जी उठने के द्वारा हमें जीवित आशा के लिए फिर से जन्म दिया है। 1 पतरस 1:3. और परमेश्वर ने हमें कलीसिया के रूप में बनाया है, एक जीवित मंदिर जहाँ परमेश्वर की आराधना की जाती है। हम नई मानवता हैं।

चर्च भी नई मानवता है। मसीह नया आदम है, और उसमें यहूदियों और अन्यजातियों के बीच परमेश्वर का मेल-मिलाप एक नई मानवता का निर्माण है। मसीह, हमारी शांति, यहूदियों और अन्यजातियों के बीच शत्रुता को दूर करती है, और परमेश्वर दो विभाजित लोगों में से एक नई मानवता बनाता है।

पौलुस ने चर्च को मानवता के सजीव प्रदर्शन के रूप में वर्णित करने के लिए नई सृष्टि की भाषा का उपयोग किया है। इफिसियों 2:13 से 16. यद्यपि वह परमेश्वर की छवि में बनाया गया था, आदम ब्रह्मांड में परमेश्वर को प्रदर्शित करने में विफल रहा, और इस्राएल, जो परमेश्वर की छवि भी है, वही करता है।

लेकिन मसीह नए आदम और परमेश्वर की परिपूर्ण छवि के रूप में आता है, जहाँ वे असफल होते हैं, वहाँ सफल होता है। अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से, वह उसी छवि में लोगों को फिर से बनाता है। मसीह के साथ एकता के माध्यम से, चर्च अब परमेश्वर की छवि है।

हम एक नए लोग हैं, नई मानवता, जिसे दुनिया के सामने परमेश्वर को प्रदर्शित करने के लिए बुलाया गया है। इफिसियों 2:15, इफिसियों 4:13 और 24। इफिसियों 2:15, इफिसियों 4:13 और 24।

चर्च पहले से ही नई मानवता है। इफिसियों 2:14 से 18. लेकिन एक ... को प्राप्त करना एक परिपक्व मानवता को प्राप्त करना है।

इफिसियों 4:13. ऐसा इसलिए है क्योंकि ब्रह्मांडीय मेलमिलाप का परमेश्वर का शाश्वत उद्देश्य अभी तक पूरी तरह साकार नहीं हुआ है। पाप और अन्याय अभी भी होते हैं। हालाँकि, परमेश्वर एक नई सृष्टि लाएगा।

आश्चर्यजनक रूप से, परमेश्वर की नई सृष्टि चर्च में पहले से ही चल रही है। चर्च अभी भी आने वाली अंतिम नई सृष्टि का पहला फल है। हम नई सृष्टि की एक वास्तविक वास्तविकता और आने वाले समय का पूर्वानुभव दोनों हैं।

इस प्रकार, चर्च नई मानवता है। यह इस बात की एक झलक है कि चीजें कैसी होनी चाहिए और ब्रह्मांड आखिरकार कैसा होगा। हम ईश्वर का परिवार हैं।

सद्गुण के रूप में, जब हम चर्च की बाइबिल की तस्वीरों, चर्च की नई नियम की तस्वीरों पर नज़र डालते हैं, तो हम परमेश्वर के परिवार हैं। मसीह में हमारे गोद लिए जाने के कारण, हम परमेश्वर के परिवार भी हैं। गोद लिए जाने से पहले, हम शैतान की संतान और पाप के गुलाम थे।

गलातियों 4:3, 1 यूहन्ना 3:10. लेकिन हमारे दयालु परमेश्वर ने हमें बचाया और हमें अपने बच्चों के रूप में एक नई पहचान दी, जैसा कि यूहन्ना ने कहा है। उद्धरण, देखें कि पिता ने हमें कितना प्यार दिया है कि हम परमेश्वर की संतान कहलाएँ। 1 यूहन्ना 3:1. ऐसा इसलिए होता है क्योंकि परमेश्वर ने अपने बेटे को भेजा, जो एक स्त्री से पैदा हुआ, व्यवस्था के अधीन पैदा हुआ ताकि व्यवस्था के अधीन लोगों को छुड़ाया जाए ताकि हम बेटों के रूप में गोद लिए जाने की स्वीकृति प्राप्त कर सकें।

गलातियों 4:4 और 5. मसीह हमारे स्थानापन्न के रूप में मरता है, क्रूस पर अपनी शापित मृत्यु में हमारे लिए शापित बन जाता है ताकि हमें व्यवस्था के अभिशाप से छुड़ा सके। गलातियों 3:13. मसीह ने हमारे लिए अभिशाप बनकर हमें व्यवस्था के अभिशाप से छुड़ाया। अब हम परमेश्वर के वारिस हैं और मसीह के साथ सह-वारिस हैं।

रोमियों 8:15 और 17. गलातियों 4:6 और 7 भी देखें. हम स्वयं परमेश्वर और नए आकाश और नई पृथ्वी के वारिस होंगे. 1 कुरिन्थियों 3:21 से 23.

प्रकाशितवाक्य 21:3. मैंने इसे पहले ही पढ़ लिया है। इसे अक्सर नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। 1 कुरिन्थियों 3 सिखाता है।

खैर, आप देखेंगे कि यह क्या सिखाता है। सब कुछ विश्वासियों का है। पॉल कहते हैं, आप कुरिन्थ की कलीसिया में अलग-अलग गुटों को लेकर क्यों बहस और लड़ाई कर रहे हैं? यह बेतुका है।

पॉल और पीटर मसीह के हैं। वे कोई नहीं हैं। प्रभु बुद्धिमानों के विचारों को जानता है।

1 कुरिन्थियों 3:20. वे सब व्यर्थ हैं। कोई मनुष्य पर घमण्ड न करे, क्योंकि सब वस्तुएं तुम्हारी हैं।

1 कुरिन्थियों 3 की आयत 22. सब कुछ तुम्हारा है, चाहे पौलुस हो या अपुल्लोस या कैफा, या पीटर, या दुनिया या दुनिया या जीवन या मृत्यु या वर्तमान या भविष्य। सब कुछ तुम्हारा है, और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है। दुनिया हमारी है।

यह अभी वचनबद्ध रूप में है, लेकिन एक दिन, हम ऐसा करेंगे; नया आकाश और नई पृथ्वी परमेश्वर के लोगों की होगी, जैसे कि त्रिएकत्व। मसीह के साथ एकता के कारण त्रिएकत्व पहले से ही हमारा है, जो कि त्रिएकत्व के साथ एकता है, लेकिन इसे पहले से कहीं अधिक बाहरी रूप से दिखाया और जाना जाएगा। मसीह में हमारा दत्तक ग्रहण हमें स्थायी रूप से परमेश्वर से जोड़ता है और हमें परमेश्वर के परिवार के रूप में एक दूसरे से जोड़ता है।

याकूब चर्च को एक आध्यात्मिक परिवार के रूप में सिखाता है। यह परिवार जैसे रिश्तों का एक समुदाय है जहाँ प्रेम, सत्य और सेवा इसके सदस्यों की पहचान हैं, याकूब 1:18 से 27। याकूब ने अपने पत्र के माध्यम से 1:2 से 5:19 तक भाइयों और बहनों का उपयोग करके चर्च को एक परिवार के रूप में दर्शाया है जहाँ लोग एक दूसरे से प्यार करते हैं, एक दूसरे से बंधे हुए हैं, और यह परिवार मसीह का अनुसरण करने में एक दूसरे को प्रोत्साहित करने के लिए इकट्ठा होता है, जिसमें सत्य सिखाना, पवित्रता में रहना और गरीबों की सेवा करना शामिल है।

परमेश्वर के लोगों की हमारी अंतिम तस्वीर यह है कि हम परमेश्वर के लोग हैं। परमेश्वर अब्राहम और उसके वंशजों के साथ वाचा में प्रवेश करता है कि वह उनका परमेश्वर होगा, उत्पत्ति 17:7। मैं तुम्हारा परमेश्वर और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंशजों का, तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश का परमेश्वर रहूँगा। क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया है, इसलिए वे उसके हैं।

वह खुद को उनके प्रति वचनबद्ध करता है और उन्हें अपना होने का दावा करता है, लैव्यव्यवस्था 26:12। परमेश्वर वादा करता है कि एक नई वाचा में, वह उनका परमेश्वर होगा और वे उसके लोग होंगे, यिर्मयाह 31:33। नया नियम परमेश्वर की नई वाचा की प्रतिज्ञाओं को कलीसिया, परमेश्वर के लोगों पर लागू करता है, इब्रानियों 8:10।

इस्राएल प्रभु की दाख की बारी थी, यशायाह 5:1 से 7. कलीसिया यीशु में बनी रहती है, जो सच्ची दाखलता है, यूहन्ना 15, 1 से 8. इस्राएल मंदिर था। इस्राएल के पास मंदिर था। कलीसिया परमेश्वर का मंदिर है, 1 कुरिन्थियों 3:16.

जैसा कि हमने देखा, पतरस इस्राएल के बारे में पुराने नियम के वर्णन को कलीसिया पर लागू करता है। तुम चुने हुए लोग थे, एक शाही याजकवर्ग, एक पवित्र राष्ट्र, उसकी अपनी निज प्रजा। एक बार तुम लोग नहीं थे, अब तुम परमेश्वर के लोग हो।

तुम्हें दया नहीं मिलती, लेकिन अब तुम्हें दया मिली है, 1 पतरस 2:9 और 10। इस प्रकार विश्वास करने वाले इस्राएलियों और चर्च के बीच एक निरंतरता है, लेकिन यह एक पूर्ण पहचान नहीं है। क्योंकि पॉल सिखाता है कि जातीय यहूदियों के लिए अभी भी एक भविष्य है, यानी जातीय यहूदियों को अब्राहम के रक्त वंशजों को खोजना है, रोमियों 11:25 से 32 तक।

उन्हें मसीह के पास लाया जाएगा और वे उसके चर्च का हिस्सा बनेंगे। परमेश्वर अपने लोगों को चुनने, बचाने, रखने और परिपूर्ण बनाने में अनुग्रहपूर्ण पहल करता है। वह हमें हमारे कामों से अलग उद्धार के लिए चुनता है, 2 तीमुथियुस 1:9 और 10।

यह उसके उद्देश्य और अनुग्रह पर आधारित है जो उसने हमें दिया है। यह उसके उद्देश्य और अनुग्रह पर आधारित है, जो अनुग्रह उसने हमें दिया है, 1 पतरस 1:10। उसने हमें अनंत युगों से पहले अपना अनुग्रह दिया।

परमेश्वर हमें मसीह को हमारे लिए मरने और जी उठने के लिए देकर बचाता है, यूहन्ना 10:14 से 18। वह हमें अपने प्रेम में रखता है, रोमियों 8:35 से 39। अंत में, वह कलीसिया को पूर्ण पवित्रता

में अपने सामने प्रस्तुत करेगा, इफिसियों 5:27, बिना किसी दाग या झुर्री या किसी अन्य चीज के, उसकी सुंदर दुल्हन, पवित्र दुल्हन पर कोई अन्य दोष के।

चर्च परमेश्वर के एकजुट लोग हैं, व्यक्तियों का समूह नहीं। आत्मा परमेश्वर के लोगों में व्यक्तिगत रूप से वास करती है, 1 कुरिन्थियों 6:19 और 20 और सामूहिक रूप से, 1 कुरिन्थियों 3:16, 17। आत्मा हमें अपनी इच्छानुसार आध्यात्मिक उपहार देती है, 1 कुरिन्थियों 12:11।

वह हमें परमेश्वर के लिए जीने और सुसमाचार फैलाने की शक्ति देता है, प्रेरितों के काम 1:8, 2 कुरिन्थियों 12:9, इफिसियों 6:10। परमेश्वर हमें शक्ति देता है, आत्मा हमें परमेश्वर के लिए जीने और सुसमाचार फैलाने की शक्ति देती है, प्रेरितों के काम 1:8, 2 कुरिन्थियों 12:9, इफिसियों 6:10। परमेश्वर हमें आराधना करने और मिशन में उसकी सेवा करने के लिए प्रेरित करता है।

अंत में, हम उसके लोग होंगे और परमेश्वर स्वयं हमारे साथ होगा और हमारा परमेश्वर होगा। उद्धरण समाप्त करें, प्रकाशितवाक्य 21:3। केवल यहाँ परमेश्वर बहुवचन लोगों का उपयोग करता है, यह दर्शाता है कि जातीय विविधता हमें उसके अंतिम लोगों के रूप में चिह्नित करेगी। इस प्रकार चर्च के नए नियम के अंशों पर हमारा व्याख्यान समाप्त होता है।

हमारे अगले व्याख्यान में, हम पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के बारे में बात करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा चर्च के सिद्धांतों और अंतिम बातों पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 2 है, चर्च के मुख्य अंश और चित्र।